RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without
prepayment No.-WPP-255/31.12.2018

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना

समाचार

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

Editor - Prafulla Parakh

वर्ष 1 अंक 9 | मूल्य - रू.1/- | सितम्बर 2016 | पृष्ठ - 8

पर्युषण महापर्व

मिच्छामि दुक्कड़म

पयुर्षण महापर्व | भाद्रपद | जैन संवत 2542

मंथन

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से 2
धार्मिक सिध्दांतों की व्यावहारिक सुदृढ़ता आज की आवश्यकता 3
धार्मिक शिक्षाओं का सामाजिक उत्तदायित्वों में रूपांतरण 4
बी.जे.एस. गतिविधियाँ 5
प्रतिभाएं जो हमारी प्रेरणास्त्रोत हैं 6
अल्पसंख्यक सूचनाएं, जानकारी एवं समाचार 7

प्रिय आत्मजन,

गतमाह भारतीय जैन संघटना के संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में उन्हें समर्पित अंक जिसमें उनके व्यक्तित्व व उनकी विशिष्ट कार्यशैलियों से आपको परिचित करवाने का सारगर्भित प्रयास किया था, आप में से अनेक पाठकों ने पसंद किया, एतदर्थ धन्यवाद ! अगस्त माह में हमने विभिन्न त्यौहारों को उल्लास पूर्वक मनाया जो हमारे देश की विभिन्नताओं में समानताओं की संस्कृति का परिचायक है. भाद्रपद में प्रतिवर्ष हम सभी को पर्वाधिराज "पर्यूषण" पर्व मनाने का सौभाग्य प्राप्त होता है. प्रस्तुत अंक पर्यूषण की महिमा व उसके समयानुरूप धार्मिक व सामाजिक प्रयोजनों पर आधारित है.

'जैन दर्शन' मात्र धर्म ही नहीं है अपितु जीवनशैली है जो "जियो ओर जीने दो" के सिद्धांत को प्रतिपल व्यावहारिकता व नित्यचर्या प्रदान करती है. भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत सम्पूर्ण विश्व में शांति, सौहार्द एवं सहिष्णुता की स्थापना हेतु प्रासंगिक एवं कारगर हैं. 'जैन दर्शन' में आत्मशुद्धि एवं आत्मचिंतन के पर्व 'पर्यूषण' के महत्व से हम सभी परिचित हैं. आत्मा की शुद्धि हेतु विभिन्न लक्षणों जैसे - क्षमा, विनय, सरलता, संतोष, शोच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य आदि को आत्मा का स्वभाव बनाने हेतु इसे तप की महिमा से अलंकृत किया गया है. प्रत्येक श्रावक को उसकी अपनी क्षमताओं, समझ एवं श्रद्धा के अनुकूल इस पर्व-काल में आत्मशुद्धि के व्यावहारिक नित्यचर्या के प्रति अधिकतम निकटता हेतु संकल्पित होना चाहिए. किन्तु एक प्रश्न जो सदैव मेरे मन को कचोटता है कि क्या हम 8 या 10 दिनों के पर्यूषण के महत्वपूर्ण समय का सदुपयोग उसकी मूलभावना व उद्देश्यों या जैन दर्शन के अनुरूप कर रहे हैं ? या मात्र परम्पराओं का निर्वहन करने के दिखावे के साथ संवत्सरी के पावन दिन पर महज औपचारिकताओं की खानापूर्ति तो नहीं कर रहे ?

मित्रों! गत कुछ दशकों में ऐसे अनेक प्रश्न हमारे समक्ष खड़े हुए हैं जो आज भी अनुत्तरित हैं. क्या आपको नहीं लगता कि आध्यात्मिकता का स्थान अब आडम्बरों एवं अंधश्रद्धा ने ले लिया है? धर्म के नाम पर अपव्ययों की नवीन संस्कृति का निर्माण हो रहा है जिसके हम मूक साक्षी बन चुके हैं. धर्म के नाम पर बड़े-बड़े आयोजनों व उनमें होते अपार अपव्ययों का क्या जैन धर्म की मूल भावना या आध्यात्मिकता से कुछ संबंध है ? दर प्रति वर्ष अत्यंत ही महंगे होते जा रहे चातुर्मास, धार्मिक कार्यक्रमों की भड़कीली एवं महंगी आमंत्रण पत्रिकाओं का प्रकाशन, अनावश्यक भव्यताओं का प्रदर्शन, आडम्बरों एवं कर्मकांडों को ही धर्म के वास्तविक स्वरुप में प्रस्तुति के प्रयास व उन पर किया जा रहा अपार व्यय, करोड़ों की लागत से नये-नये मंदिर निर्माण आदि यह सब धर्म व धर्म की प्रभावना के नाम पर किया जा रहा है, किन्तु क्या परिणाम प्राप्त हो रहे हैं, इस हेतु मुल्यांकन की पद्धति का विकास हुआ ही नहीं है ? क्या देवालयों के साथ-साथ शिक्षालयों व अस्पतालों के भी निर्माण नहीं किये जाने चाहिए ?

आत्मशुद्धि के इस महापर्व "पर्यूषण" के अवसर पर, आईये, स्वयं अपने ही अंतर्मन से प्रश्न करें कि क्या हम रुढ़िवादी परंपराओं, अंधश्रद्धा एवं कर्मकांडों के मायाजाल को तोड़ कर शनै: शनै: विलोप हो रहे वास्तविक धर्म को जनकल्याणरूपी सन्दर्भों में प्रस्थापित कर सकेंगे ? धर्म का कार्य समाज को योग्य पोषण प्रदान करना है किन्तु बह रही उल्टी गंगा में समाज धर्म को पोषित करने की कुचेष्टा कर रहा है, जो पाखंडों को जन्म देने के अतिरिक्त बढ़ रही धार्मिक असहिष्णुता का मूल कारण है. प्रत्येक पंथ स्वयं को श्रेष्ठ दर्शाने की स्पर्धा में डूबा है जिससे महसूस होता है कि वह अपने मुख्य लक्ष्य से भटक रहा है. हमारा समाज कैसा हो ? हमारे धर्म का स्वरुप क्या हो? इन सब विषयों का आत्मशुद्धि के पावन पर्यूषण पर्व पर आत्मचिंतन किया जाना चाहिए व इस मुद्दे को समाज के प्रत्येक स्तर पर ले जाने की आवश्यकता है क्योंकि यह ही समाज व धर्म के हित में है.

अंत में आप सभी से पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व के शुभ अवसर पर अपने द्वारा हुए समस्त अविनय हेतु मन,वचन, काया से क्षमायाचना चाहता हूँ. मिच्छमी दुक्कडम.

प्रफुल्ल पारख
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

5-6 Nov. 2016

विनम्र निवेदन

भारतीय जैन संघटना का

राष्ट्रीय अधिवेशन 2016

दि. 5 व 6 नवंबर 2016 को चैन्नई में आयोजित होगा.

कृपया यह तिथि आरक्षित रखे.

- National & International Speakers
- Keynote Addresses by Subject Experts
- Opportunity for Nationwide Networking

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

मंथन

धार्मिक सिद्धांतों की व्यावहारिक सुदृढ़ता आज की आवश्यकता

मानव सभ्यता के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि युद्धों, भौगोलिक व क्षेत्रीय अनाधिकारों, प्रभुत्वता एवं एक-दूसरे के विरुद्ध दंगों, विभिन्न जातियों एवं धर्मों को श्रेष्ठ प्रमाणित करने के लिए प्रदर्शन व शासन हेतु शक्ति संचय के प्रयासों से भरा पड़ा है. काल-परिवर्तन के साथ, प्राचीनकाल की शासकतंत्रीय शासन प्रणाली से आधुनिक युग की प्रजातंत्रीय प्रणाली की यात्रा हमने अवश्य पूर्ण की है किन्तु दुर्भावनाओं की जड़ें तो आज भी गहराई तक पेठी हुई हैं, जो रुढ़िवाद, जातिवाद एवं आतंकवाद के रूप में विद्यमान है. यदि हम धार्मिक सिद्धांतों व शिक्षा का अनुपालन नित्यचर्या में करें तो निश्चित ही हम वर्तमान युग में शांतिपूर्ण एवं सहअस्तित्व की संकल्पना को मूर्तरूप प्रदान कर सकते हैं. किन्तु क्या हम ऐसा कर पा रहे हैं? वास्तविकता तो यह है कि हम धर्म को परम्पराओं तथा पंथवाद को उत्तेजना देने मात्र का प्रकल्प मान चुके हैं. धर्म में निहित मानवीय संवेदनाओं जैसे करुणा एवं दया आदि को हम विस्मृत करते जा रहे हैं, परिणामस्वरूप समाज जातिवाद, साम्प्रदायिकता एवं अपराधों की बेड़ियों में जकड़ता जा रहा है. यह स्थिति मात्र हमारे देश की ही नहीं अपितु समस्त विश्व की है, जो निश्चित ही चिंता का विषय है.

वर्तमान में, समस्त विश्व एसी विकट परिस्थितियों का सामना कर रहा है, तो क्या हम हाथ पर हाथ रखे मूक दर्शक की भाँती तमाशा देख सकते हैं? नहीं! निश्चित तौर पर नहीं. यदि हमने सामजिक एवं धार्मिक मूल्यों की गिरती प्रवृत्ति को तमाशाई बनकर नज़रंदाज़ किया तो इतिहास हमें कभी माफ़ नहीं करेगा. यह हमारा उत्तरदायित्व ही है कि आवश्यक हस्तक्षेपों, सकारात्मक एवं निर्णायक कृत्यों से परिणामलक्षी परिवर्तनों का दौर प्रारम्भ करें. अल्पसंख्यक जैन समाज को राष्ट्रीय मुख्य विचारधारा के अंतर्गत चिंतन-मनन, बहस एवं विचार-विमर्श प्रारम्भ कर, धर्म के अर्थ, सिद्धांतों व प्रासंगिकताओं को सही अर्थों में उजागर करना चाहिए.

जैन धर्म के तीन मुख्य सिद्धांत (1) अहिंसा (2) अनेकांत एवं (3) अपरिग्रह समाज के स्वस्थ्य विकास हेतु मूलरूप से आवश्यक हैं जिनकी प्रासंगिकताओं को परिवर्तनशील विश्व द्वारा स्वीकार किया जाना निश्चित ही समस्त मानव जाति हेतु हितकर है. 21 वीं शताब्दी में जहाँ मानव जाति के अस्तित्व पर प्रहार करती विविध चुनौतियाँ जन्म ले रही हैं, जैन धर्म के निम्न सिद्धान्तों का प्रतिपालन समाज के अस्तित्व को अभेद्य सुरक्षा प्रदान कर सकता है:

1) अहिंसा

जैन दर्शन उसके धर्मावलम्बियों को अहिंसक जीवन जीने की ही आज्ञा देता है. किन्तु यह भी वास्तविकता है कि मानव को स्वयं के अस्तित्व हेतु हिंसात्मक गतिविधियों में रत रहना पड़ता है. जिसमें खाना, पीना एवं श्वांस क्रियाएँ आदि भी सम्मिलित है, किन्तु जैन दर्शन की अहिंसा की विचारधारा अपेक्षाकृत भिन्न है. जैन दर्शन में व्यक्ति के कृत्यों की अपेक्षा उसके उद्देश्यों, वैचारिकी तथा परिणामों के आधार पर हिंसा को परिभाषित किया जाता है. अत: अहिंसा का शत-प्रतिशत रूप से पालन, उचित ज्ञान व अहिंसा के अभिप्राय को समझने की भावना के साथ-साथ सावधानियां रखते हुए उस वैचारिक प्रवृत्ति का विकास किसी तरह की आसक्ति से नहीं करना ही अहिंसा है. अहिंसा की विचारधारा को लगभग सभी धर्मों में मान्यता है. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अहिंसक प्रदर्शनों के बल पर देश के भविष्य को निर्धारित करने हेतु जिस सशक्त संघर्ष को संचालित किया उसके मूल में "अहिंसा" विद्यमान रही. गांधीजी एसे व्यक्ति थे जिन्होनें अहिंसा को सांकेतिक तरीकों से प्रयोग किया जबकि आमतौर पर शक्ति या शासन हेतु हिंसा को ही आवश्यक विकल्प माना जाता रहा है. हमें उदाहरण स्वरुप यह स्मरण में रखना चाहिए कि भारत का स्वतन्त्रता संग्राम अहिंसक तरीकों से लड़ा गया जिससे यह प्रमाणित हुआ कि अहिंसक मूल्यों की विचारधारा से समाज में परिवर्तन लाकर, विश्व को भेदभाव व आतंकवाद से मुक्त कराया जा सकता है.

2) अनेकांत

हाथी ओर पांच अंध व्यक्तियों की प्रसिद्ध कहानी हमें इस हेतु प्रेरित करती है कि वास्तविकताओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्वीकार करें. मात्र एक दृष्टिकोण से वास्तविकता का आशय बयान नहीं होना चाहिए. किसी भी वास्तविकता की विभिन्न आवृत्तियाँ हो सकती है, जिनका समावेश सत्यता हेतु आवश्यक है. हमारी प्रतिदिन की चर्या में प्रायः हम यह सिद्धांत विस्मृत कर देते हैं तथा हमारे एक या दो दृष्टिकोणों के आधार पर हम निर्णय पर पहुंचनें हेतु लालायित हो जाते हैं. समसामयिक प्रबंधन प्रणाली में विभिन्न माध्यमों एवं दृष्टिकोणों से रिपोर्ट प्राप्त करने का महत्त्व है. इसी तरह आधुनिक प्रजातंत्रीय प्रणाली में अनेक विचारधाराओं के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है व प्रजा को उनकी प्राथमिकताओं के अनुरूप चुनाव करने का अवसर दिया जाता है. यह सब अनेकांत के प्राचीन सिद्धांतों का व्यावहारिक स्तर पर अमलीकरण है. दृष्टिकोणों या यथार्थताओं पर स्थिर न रहते हुए, अनेकांत तर्कों की प्रस्तुति हेतु पथ प्रदान करता है. अनेकांत में विचारों की अभिव्यक्ति व उन्हें सुनना व समझना महत्वपूर्ण है. अनेकांत अहिंसा के मूल में है क्योंकि यह जीव हिंसा व वैचारिक हिंसा के भेद को प्रस्तुत करता है.

3) अपरिग्रह

अपरिग्रह का अर्थ वस्तुओं के प्रति अनासक्ति, अंकुशहीनता तथा अभौतिकता है. भौतिकता या संचय की प्रवृत्ति से दूर रहकर मूल्यों सहित अर्थपूर्ण जीवन-यापन करना ही अपरिग्रहवाद है. किसी आवश्यक वस्तु का स्वामित्व वर्जित न होकर, वस्तु के अधिपत्य की लालसा को परिग्रह की संज्ञा दी गयी है. एक ऐसा समाज जिसने स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने हेतु अनेक बार स्थानान्तरण (Migration) किया, जिसने व्यवसायी समाज के रूप में राष्ट्रीय संपत्ति व सकल घरेलु उत्पाद (GDP) को प्रभावी अंशदान प्रदान किया व दानशूरता में सदैव ही अग्रसर रहा है. यह सब अपरिग्रह की शिक्षा के कारण ही संभव हुआ है. जैन धर्मावलम्बियों द्वारा जरूरतमंदो की सहायता दान नहीं अपितु धर्म है. हमारे लिए धर्म का अर्थ सही कार्यों में मात्र देने ओर देने में है, जो अपरिग्रह की भावना से ही प्रेरित है.

आईये! 'पर्यूषण' में धार्मिक सिद्धांतों को वर्तमान सन्दर्भों में पुर्नवर्णित करने हेतु संकल्पित हों, ताकि मानव जाति की खुशहाली हेतु हम वह बागडौर संभालें जिससे समस्त विश्व, जैन धर्म के सिद्धांतो से लाभान्वित हो सके.

धार्मिक शिक्षाओं का सामाजिक उत्तरदायित्वों मे रूपांतरण

जैन समाज के गौरव **डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े**

यह प्रसन्नता का विषय है कि विश्व की 90% जनसंख्या धार्मिक या आस्तिक है. हम किस श्रेणी में हैं? 90% या 10% की, यह हमारी जीवन-शैली पर निर्भर करता है. इसे मानव जाति का सौभाग्य ही समझा जाएगा कि विश्व में कुछ लोग मूलरूप से धार्मिक होने के साथ उनके संस्थानों व अनुयाईयों हेतु प्रख्यात हैं, क्योंकि उन्होंने मानवीय सेवाकीय कार्यों से देश में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है. सम्मानीय डॉ. वीरेंद्र हेगड़े एसे ही अद्वितीय धार्मिक व्यक्तित्व है जो जग-प्रसिद्ध तो हैं ही, साथ ही उनके द्वारा किये जा रहे मानव कल्याण कार्यों के कारण वह आज सर्वोच्च शिखर पर बिराजमान हैं.

"धर्माधिकारी" के नाम से सुशोभित श्री हेगड़े को श्री क्षेत्र धर्मस्थल के अनुयाईयों व लाखों की संख्यां में उनके भक्त उन्हें भगवान् के समरूप मानते हैं क्योंकि वह आम मानव से लाखों लाखों कदम आगे हैं. संभव है कि आज हममें से अधिकांश को उनकी करुणामयी छवी का आभास न हो या हम उनसे परिचित न हों, किन्तु डॉ. हेगड़े ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनसे समाज का प्रत्येक वर्ग धनिक से गरीब, बुद्धीजीवियों से साधारण आदि सभी प्रभावित हुए हैं क्योंकि वह सामाजिक आंकलन क्षमताओं व सभी को साथ लेकर चलने की कला के धनी हैं. सादगी, विनम्रता व सहानुभूति जैसे तत्वों के संगम से निर्मित डॉ. हेगड़े "धर्माधिकारी" के रूप में उन धर्म-मान्धाताओं के ठीक विपरीत हैं जो धर्म के नाम पर पर पाखंड व प्रजा की अतिसंवेदनशीलता व अरक्षितता से खेलते हैं.

आध्यात्मिकता की प्रतिमूर्ति डॉ. वीरेंद्र हेगड़े आम जरूरतमंदों की समस्याओं का निश्चित समाधान करते हैं. नियमित रूप से लोगों से मिलना, उनकी तकलीफों को समझना व उन्हें सहायता करना उनकी दिनचर्या का हिस्सा है. यही कारण है कि उन्होंने समाज की प्रगति में व्यवधानरुप देश के सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को गहराई से आत्मसात किया है. डॉ. हेगड़े श्री क्षेत्र धर्मस्थल मंदिर में बैठकर आगंतुकों से संवाद स्थापित कर सामाजिक समस्याओं को मात्र समझते ही नहीं अपितु समस्याओं के निराकरण को महत्त्व देते हुए अनेक कार्य योजनाओं पर कार्यरत रहते हैं. दूरदृष्टा डॉ. हेगड़े ने देश के युवाओं की शक्ति को पहचाना व उनके सक्षमीकरण की अनेक योजनाओं को स्थाई रूप से क्रियान्वित किया है.

दानवीर डॉ. हेगड़े ने ग्रामीण भारत के समुचित विकास हेतु अनेक योजनाएं प्रारम्भ की हैं. डॉ. हेगड़े हम सभी के लिए अनुकरणीय व्यक्तित्व (Role Model) हैं क्योंकि वे कुछ गिने चुने धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेतृत्वकारों में से हैं जिन्होंने धार्मिक शिक्षाओं का अतुलनीय सामाजिक उत्तरदायित्वों में रूपान्तरण किया है.

आर्थिक- सामाजिक सक्षमीकरण के महानायक डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े

● आपने कर्नाटक के तटीय जिल्हों के 600 गावों एवं 6 नगरों में ग्रामीण विकास योजना प्रारम्भ की है जिसमें 1.35 लाख परिवारों को कृषि एवं कृषि उत्पादों में सक्षम किया जा रहा है. इसके अतिरिक्त, इस योजना में तकनीकी हस्तांतरण, महिला सक्षमीकरण, वैकल्पिक उर्जाओं के प्रयोग, अर्थोपार्जन संबंधी कार्यकलाप, सूक्ष्म ऋण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मकान आदि सम्मिलित हैं.

● आपने ग्रामीण विकास एवं स्व-रोज़गार प्रशिक्षण संस्थान (RUDSETI) की सिंडीकेट बैंक, सिंडिकेट एग्रीकल्चर फाऊन्डेशन एवं कनारा बैंक के सहयोग से स्थापना की जिसमें ग्रामीण बेरोजगार युवाओं को स्वरोज़गार हेतु प्रशिक्षण वर्ष 1982 से दिया जा रहा है. इस संस्था की 20 शाखाएँ समस्त भारत में कार्यरत हैं व वर्ष 2004 तक 1.50 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित किया गया, जिसकी सफलता दर लगभग 65% है.

● आपने अनेक राष्ट्र स्तरीय सेमिनारों का आयोजन अब तक किया है जिसमें "ग्रामीण भारत – वास्तविक भारत" (Rural India-Real India) सम्मिलित है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत के विकास के महत्त्व को सुग्राही बनाना था.

● आप उर्जावान आधुनिकतावादी हैं, जिन्होंने सौर उर्जा के महत्व को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है व अनेक गावों में सौर ऊर्जा प्लांट लगाने हेतु आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की हैं.

● आपने "RATHNAMANASA " नामक आदर्श होस्टल की स्थापना उजिरे में की है जहाँ कृषि, बागवानी, दुग्ध (Dairy) आदि पर प्रशिक्षण **'कल के किसान'** की अवधारणा पर नई ग्रामीण पीढी को सक्षम किया जा रहा है.

● धर्मस्थल के मंजुनाथेश्वरा एज्युकेशनल ट्रस्ट एवं SDM एज्युकेशनल सोसायटी, उजिरे के अध्यक्ष के रूप में आप कक्षा 1 से लेकर इंजीनियरिंग, मेडिकल, आयुर्वेदिक कोलेज एवं हॉस्पिटल के सफल प्रबंधन में पथप्रदर्शक भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं.

धार्मिक अग्रणी एवं नेतृत्वकार की छवि के बावजूद डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े ने कभी दिल से कर्मकांडों को न तो स्वीकारा और ना ही प्रोत्साहित किया. आप वर्ष 1972 से श्री क्षेत्र धर्मस्थल में मुफ्त सामूहिक विवाहों का आयोजन करते हैं, जिसमें वर्ष 2004 तक लगभग 10,000 युगलों के विवाह संपन्न हुए हैं. आपने विवाह उत्सवों हेतु भवनों का निर्माण बैंगलोर, कलाहल्ली, भद्रावति, मैसूर, श्रवणबेलगोला एवं बंतवाल आदि नगरों में किया है जिसमें निम्न व मध्यम आय-वर्गीय लाभान्वित होते हैं.

डॉ. हेगड़े ने ग्रामीण भारत के विकास को विभिन्न शैक्षणिक एवं आर्थिक सक्षमीकरण कार्यक्रमों से नए क्षितिज प्रदान किये. आपके द्वारा प्रदान किये गए अद्वितीय सामाजिक अंशदान एवं उदारता हेतु आपको भारत सरकार द्वारा वर्ष 2000 में पद्मभूषण एवं 2015 में पद्मविभूषण से नवाज़ा गया.

आईये! सामाजिक एवं मानवीय अभिगमों को धार्मिक सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में समझने व पुर्नवर्णित करने हेतु कुछ समय निकालें ताकि हम अपने जीवन को समाज सेवा में समर्पित करते हुए धर्म के सच्चे अनुयायी बन सकें

बी.जे.एस. गतिविधियाँ

BJS NEC सभा को संबोधित करेंगे श्री मुथ्थाजी

30 सितम्बर एवं 1 अक्टूबर, 2016 को वापी (गुजरात) मे राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति वर्ष 2014-16 की आयोजित होने वाली अंतिम सभा के प्रथम दिन भा.जै. सं. के संस्थापक श्री शांतीलालजी मुथ्था गत 2 वर्षो के कार्यो का अवलोकन करने हेतु स्वयं उपस्थित रहेंगे तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति पदाधिकारियों एवं सदस्यों को संबोधित कर आगामी २ वर्षो मे समाज विकास कार्यो मे उनकी भूमिका पर मार्गदर्शन प्रदान करेंगे.

सभा भा.जै. सं. गुजरात व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेश कोठारी के प्रतिफल व सौजन्य से संपन्न होगी.

■ ■ ■

व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान

दो दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन संपन्न

वैश्वीकरण के दौर मे अनेक चुनौतियों का सामना प्रतिदिन व्यवसायी वर्ग को करना पड़ता है. जिसके निराकरण मे भा.जै. सं. के व्यावसायिक सक्षमीकरण अभियान मे अनेक कार्यक्रमों का निर्माण कर प्रस्तुति की जा रही है.

अभियान के अंतर्गत दो दिवसीय कार्यशालाओं के 2 आयोजन दिनांक 13 व 14 अगस्त को जोधपुर मे व 14 व 15 अगस्त 2016 को भीलवाड़ा मे हुआ. दोनों कार्यशालाओं मे 50-50 युवा उद्यमियों ने भाग लिया. जोधपुर कार्यशाला मे प्रशिक्षण मेनेजमेंट गुरु श्री राकेश जैन प्रखर व भीलवाड़ा मे श्री पवन सोनी ने प्रशिक्षण प्रदान किया. ■ ■ ■

युवती सक्षमीकरण अभियान

नए पाठ्यक्रम का हुआ श्रीगणेश

21 वीं शताब्दी की सामाजिक चुनौतियों का योग्य रूप से प्रतिकार करने हेतु देश की बेटियों को सक्षम करने का कार्य भा.जै. सं. पिछले 8 वर्षो से कर रहा है. नित् बदलती सामाजिक परिस्थियों व समय की मांग के अनुरूप सक्षमीकरण पाठ्यक्रम मे परिवर्तन कर, इसे अधिक प्रभावी बनाया गया है.

नए पाठ्यक्रम को प्रभावी व परिणामलक्षी तरीकों से लागु करने हेतु युवती सक्षमीकरण के देश भर मे उपलब्ध भा.जै. सं. के सभी प्रशिक्षकों को पुर्नप्रशिक्षत करने का निर्णय लेकर प्रथम पुर्नप्रशिक्षण शिविर दिनांक 21 व 22 अगस्त, 2016 को पुणे में हुआ, जिसमें 30 प्रशिक्षकों ने भाग लिया. प्रशिक्षण मुख्य प्रशिक्षक श्री प्रफुल्ल पारख ने दिया.

इस नए पाठ्यक्रम से बेटियों मे आत्मविश्वास व क्षमताओं का विकास, वास्तविकताओं को स्वीकारने की क्षमता, निर्णय लेने की क्षमताओं के प्रति समझ, परिवार व मित्र मंडल मे सकारात्मक विश्वास का निर्माण, रिश्तों के प्रति वैचारिकता निर्माण आदि विषय पर प्रशिक्षित कर उन्हें योग्य मार्गदर्शन दिया जायेगा.

■ ■ ■

परिचय सम्मेलनों का हुआ आयोजन

भा.जै. सं. बंगलौर द्वारा दिनांक 15 अगस्त 2016 मे मेट्रीमोनिअल गेट-टू-गेदर का आयोजन बंगलौर मे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख के संयोजन मे हुआ जिसमे 30 युवक-युवतियों ने भाग लिया.

भा.जै. सं. नागपुर द्वारा दिनांक 28 अगस्त, 16 को वैवाहिक परिचय सम्मलेन का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल पारख के संयोजन मे हुआ जिसमे 116 युवतियों एवं 105 युवाको ने भाग लिया. यह परिचय सम्मलेन आयोजन व उद्देश्यों की कसौटी पर शत-प्रतिशत रूप से सफल रहा.

भा.जै. सं. मे चेप्टर्स पद्धति का हुआ शुभारंभ

भा.जै. सं. पिछले 31 वर्षो से सामाजिक क्षेत्र की अग्रणी संस्था है जो संपूर्ण देश के जैन भाइयों-बहिनों को अपना सदस्य मानकर उनके सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक विकास हेतु कार्य करती है. किन्तु बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों मे संस्था की प्रभावी एवं परिणामलक्षी कार्यप्रणाली सुनिश्चित करने हेतु भा.जै. सं. के चेप्टर्स (शाखाएँ) प्रत्येक नगर /शहर मे प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया ताकि जैन समाज का आम सदस्य संस्था के सदस्य के रूप मे स्व एवं समाज विकास हेतु उत्तरदायी एवं रचनात्मक अभिगम रख सके. प्रत्येक चेप्टर कम से कम 30 सदस्यों से प्रारंभ हो सकेंगे व नगरों /शहरों मे एक से अधिक चेप्टर्स खोलने का प्रावधान है. मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र व गुजरात मे चेप्टर्स प्रारंभ करने का कार्य गति से हो रहा है. ■ ■ ■

प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं

इनसे मिलिये

भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री सुदर्शन जैन

श्री सुदर्शन जैन शांतिलालजी मुथ्था के सामाजिक विचारों व कार्यप्रणाली से प्रभावित होकर भारतीय जैन संगठन से वर्ष 1990 में जुडे. 15 वर्षों की इस लंबी यात्रा में भारतीय जैन संगठन मे विभिन्न पदों पर सुशोभित रहे जिसमें महाराष्ट्र राज्य सचिव, विदर्भ अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्याध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य आदि मुख्य है. वर्तमान मे आप भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं व संस्था द्वारा संचालित अल्पसंख्यक लाभ जन जागृति अभियान की राष्ट्रीय प्रभारी टीम के सदस्य हैं. आपने 15 वर्षो के कार्यकाल मे महाराष्ट्र ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में भ्रमण कर भारतीय जैन संगठन के नेटवर्क को अनेक राज्यों में स्थापित किया. भारतीय जैन संगठन के उपक्रम के Federation of Jain Educational Institute ट्रस्टी एम्पावरमेंट कार्यशालाओं का विभिन्न राज्यों के अनेक विद्यालयों में संचालन किया।

अमरावती (महाराष्ट्र) निवासी, 59 वर्षीय श्री सुदर्शन जैन विरल एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धनी, समाजसेवी, म्रदुभाषी एवं श्रेष्ठ वक्ता हैं. आप अभिनंदन अर्बन बैंक के पूर्व अध्यक्ष हैं व बैंक के विकास हेतु आपने कठोर श्रम किया है। मेलघाट (महाराष्ट्र) की जनजाति के 328 छोटे बच्चों के शैक्षणिक व सामाजिक उत्थान व विकास हेतु भारतीय जैन संगठन के पुणे स्थित पुनर्वास केन्द्र में लाने में आपने रचनात्मक भूमिका अदा की. अमरावती शहर व आसपास के क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं, ट्रस्टों, धार्मिक स्थलों व सामुदायिक भवनों आदि के निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते आ रहे हैं. अमरावती पुलिस कमिश्नर द्वारा गठित शांति समिति के आप सदस्य हैं. आर्थिक रुप से विपन्न रोगियों हेतु डा. दीक्षित के प्लास्टिक सर्जरी शिविरों के सफल आयोजन आपने किये हैं. नेत्र परीक्षण शिविर, रक्तदान शिविर व अन्य उपचार शिविरों का आयोजन में आपकी सक्रिय भूमिका बनी रहती है. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती पर आयोजित सर्वधर्म सद्भावना रैली में आपको जिला स्तर पर सम्मानित किया गया. धार्मिक व आध्यात्मिक वाचन में आपकी गहरी अभिरुचि है. आपके व्यक्तिगत पुस्तकालय में 4000 पुस्तकें संग्रहित हैं, जिनका अध्ययन एवं वाचन आप कर चुके हैं.

हमें इन पर गर्व है

स्वर्गीय श्री स्वरूपचंद जैन,
आगरा

19 अगस्त, 1927 को आगरा में जन्में श्री स्वरुपचंद जैन, समाजसेवी, धर्मनिष्ठ, सरल व्यक्तित्व, प्रसिद्ध उद्यमी एवं मारसंस ग्रुप ऑफ़ इन्डस्ट्रीज के चेयरमेन व अग्रणी सामाजिक नेतृत्वकार रहे. अनेको शैक्षणिक, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में आपने बहुमूल्य योगदान दिया.

एम्.कोम. तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वर्ष 1950 से बिरला बंधुओं के औद्योगिक संस्थान, कोलकता में सेवाएँ प्रदान की. वर्ष 1956 में भाईयों के साथ मिलकर आगरा में व्यवसाय के क्षेत्र में कदम रखा. आप मारसंस इलेक्ट्रिकल इन्डस्ट्रीज की अनेक इकाईयों के चेयरमेन व ग्रुप की अन्य कंपनियों के डायरेक्टर पदों को सुशोभित करते रहे.

आपकी सदैव से ही साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अभिरुचि रही. आपकी गणना उत्तर भारत के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होती रही. आपने अनेक सामजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को नेतृत्व प्रदान किया. आप श्री शौरीपुर बटेश्वर दिग. जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिग. जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के पदाधिकारी, उत्तराँचल दिग. जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी के पूर्व अध्यक्ष एवं संरक्षक, भारतीय जैन संघटना उत्तरप्रदेश राज्य के पूर्व अध्यक्ष, आदि पदों को जीवनकाल में सुशोभित किया.

आपके अथक प्रयासों के परिणाम स्वरुप उत्तर-प्रदेश में भारतीय जैन संघटना का पदार्पण हुआ व आपके अध्यक्ष काल में समाज उत्थान एवं विकास के भारतीय जैन संघटना के विभिन्न कार्यक्रम अनेक नगरों में आयोजित हुए.

आदरणीय बाबूजी का **स्वर्गवास दिनांक** 30 **अगस्त**, 2016 को आगरा में हुआ. समाचार जानकार अत्यंत ही दु:ख हुआ. बाबूजी की धार्मिक एवं सामाजिक जीवन यात्रा उनके देवलोक से स्थगित अवश्य हुई है किन्तु उनके द्वारा समाज को दिए गए रचनात्मक योगदान हेतु वह सदैव ही हमारे प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे. उत्तर भारत व विशेषकर समस्त जैन समाज आपका सदैव ऋणी रहेगा. हम **भारतीय जैन संघटना परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं.**

प्रफुल्ल पारख, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

युवा प्रतिभाएं

सुश्री पी. वी. सिन्धु

पुर्सला वैन्कटा सिन्धु ने हाल ही मैं आयोजित रियो (ब्राजील) ओलंपिक्स में बेडमिन्टन महिला एकल चेम्पियनशिप में द्वितीय स्थान पर रहकर चंद्रपदक प्राप्त किया. 5 जुलाई, 1995 को आँध्रप्रदेश में जन्मी सुश्री पी. वी. सिन्धु देश की प्रथम महिला बेडमिन्टन खिलाड़ी बनाने का गौरव् प्राप्त किया, जिसने देश के लिए चंद्रपदक जुटाया. संकल्प एवं आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति सुश्री पी.वी. सिन्धु को राजीवगांधी खेलरत्न 2016 से सम्मानित किया गया.

सुश्री साक्षी मलिक

सुश्री साक्षी मलिक ने 58 किलोग्राम वजन की कुश्ती प्रतियोगिता में कांस्यपदक हाल ही मैं आयोजित रियो (ब्राजील) ओलंपिक्स में हासिल किया. 3 जुलाई, 1992 को हरयाणा राज्य के रोहतक जिल्हे के मोखरा गाँव के साधारण से परिवार में जन्म हुआ. सुश्री साक्षी देश की प्रथम महिला कुश्तीबाज हैं जिसने देश के लिए पदक प्राप्त किया व ओलंपिक्स कुश्तीबाजी प्रतियोगिता में अब तक का चौथा पदक प्राप्त किया. उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सुश्री साक्षी को राजीवगांधी खेलरत्न 2016 से सम्मानित किया गया.

अल्पसंख्यक सूचनाएं, जानकारी एवं समाचार

अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओ हेतु आयोजित हुई कार्यशालाएं

• 6 अगस्त, 2016 को कर्नाटक के बेलगाँम मे भारतीय जैन संघटना, कर्नाटक व भारतेश एज्युकेशन ट्रस्ट तथा गोमटेश विश्वविद्यालय द्वारा सयुंक्तरूप से आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला मे 300 से अधिक अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओ के ट्रस्टीयों एवं प्रधानाचार्यों ने भाग लिया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जफ़र आगा, कार्यकारी अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयोग, अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान, नई दिल्ली की उपस्थिति से कार्यशाला सुशोभित हुई. भारतीय जैन संघटना के अल्पसंख्यक लाभ जन-जागृति अभियान के राष्ट्रीय संयोजक श्री निरंजन जुवां जैन ने कार्यशाला का मुख्यवक्ता के रूप में संचालन किया.

• 11 अगस्त, 2016 को गुजरात के जामनगर में भारतीय जैन संघटना, जामनगर एवं ओसवाल एज्युकेशन ट्रस्ट, जामनगर के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 35 से अधिक शिक्षण संस्थाओं के 100 से अधिक ट्रस्टियों एवं प्रधानाचार्यों आदि ने भाग लिया. कार्यशाला में संविधान के अनुच्छेद 30 में वर्णित अपनी रुची की शिक्षण संस्थाएं खोलने व उसके स्वतंत्र प्रसाशन" के अधिकारों पर विवेचना श्री निरंजन जुवां जैन द्वारा की गयी. अल्पसंख्यक दर्ज़ा प्राप्त करने की विधि एवं प्रक्रियों से लेकर सरकारी योजनाओं से उपलब्ध विविध लाभों पर विस्तृत जानकारी दी .

अल्पसंख्यक विद्यार्थी छात्रवृत्ति आवेदन तिथियों पर ध्यान दें

अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने शैक्षणिक वर्ष 2016-17 हेतु छात्रवृत्ति आवेदन कि निम्न संशोधित तिथियाँ घोषित की हैं:

योजना का नाम	तिथियाँ	कक्षा	आवेदन की पद्धति
प्री-मेट्रिक	15 जुलाई से 3० सितम्बर	1 से 10	1 से 8 ऑफ-लाईन 9 से 10 ऑन-लाईन
पोस्ट-मेट्रिक	15 जुलाई से 31 अक्टूबर	सभी के लिए	ऑन-लाईन
	15 जुलाई से 3० सितम्बर	11 एवं 12	ऑन-लाईन
मेरिट-कम-मीन्स	15 जुलाई से 31 अक्टूबर	सभी के लिए	ऑन-लाईन

गत वर्ष के छात्रवृत्ति नियम, छात्रवृत्ति राशि, कक्षा 9 व ऊपर के सभी विद्यार्थियों हेतु ऑन-लाईन आवेदन की पद्धति, कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों हेतु ऑफ-लाईन पद्धति में किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया गया है. ऑन-लाईन आवेदन हेतु भारत सरकार के पोर्टल 'www.scholarships.gov.in' पर log-on करे.

11 वीं कक्षा में अध्ययनरत अल्पसंख्यक छात्राओं हेतु छात्रवृत्ति

शैक्षणिक वर्ष 2016-17 में 11वीं कक्षा में अध्ययनरत अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय की छात्राएं ' मेघावी छात्राओं की मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना' में रु. 12,000 की छात्रवृत्ति हेतु आवेदन करें. गत वर्ष कक्षा 10 में जिन्होंने 55% से अधिक अंक प्राप्त किये हों व जिनके परिवार की वार्षिक आय रु. 1 लाख से अधिक नहीं है, आवेदन हेतु पात्रता रखती हैं. योजना की सम्पूर्ण जानकारी व आवेदन पत्र डाउन-लोड करने हेतु मौलाना आज़ाद फाउंडेशन की website 'www.maef.nic.in' का भ्रमण करे. आवेदन की तिथियां 30 सितम्बर, 2016 तक खुली है. भरे हुए आवेदन पत्र मौलाना आजाद शिक्षा संस्थान, सामाजिक न्याय सेवा केंद्र चेम्सफोर्ड रोड, नई दिल्ली 110055 को प्रेषित करें.

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

बी.जे.एस. राष्ट्रीय अधिवेशन 2016

चेन्नई (तमिलनाडु)

5 एवं 6 नवम्बर, 2016

हार्दिक आमंत्रण

Time 4 Change - Change 4 Time

व्यक्तिगत व समूह रजिस्ट्रेशन अवश्यक (डेलिगेट्स हेतु खान-पान एवं सितारा होटल मे । रात्रि हेतु मुफ्त आवास व्यवस्था) अधिक जानकारी व रजिस्ट्रेशन हेतु http://bjsindia.org/Convention/ को Visit करें.

WB Gold
WB Utsav
• PULSES • CEREALS
• RICE • FLOURS
• TEA POWDER • MASALA

MUTHA WAGMAL BURAJI GROUP
HUBLI | DHARWAD | SHIMOGA | KUNDAPUR | MYSORE | BELGAVI
H.O.: W.B. Plaza, 2nd Floor, New Cotton Market, HUBLI-29. Tel.: 0836-2382777
E-mail : mwbgroups@gmail.com Website : www.mwbgroups.com

INDIA GATE
BASMATI RICE

Uni Craft
UNIFORM
A Mukesh Hinger Initiative...

Shubham Creations
Karnatak Cloth Palace
Station Road, HUBLI-580 020. Ph : 0836-2363431, 2216431
Opp. KEB, Vidyagiri, P. B. Road, Dharwad. Ph : 0836-2216435
E-mail : unicraftuniforms@gmail.com

SWASTIK
Manufacturer :
Bare Insulated Copper & Aluminium Conductor
M-4, Industrial Estate, Gokul Road, HUBLI-30.
Tel. : 2331243, 2332781. Fax : 4252422
Email : swind@swastikconductors.com
mktg@swastikconductors.com | www.swastikconductors.com

PRAKASH ELECTRIC COMPANY
Authorised Dealers
Lisha SWITCHES · Leon MODULAR SWITCHES · Leon MODULAR SWITCHES · Finolex Cables Limited · POLYCAB WIRES & CABLES · COBRA CABLES · HAVELLS
Wholesale Electrical Dealers in HT & LT Line Materials
Showroom at BELGAUM GALLI, HUBLI-580 028.
Tel.: 0836- 2365160, 9945098111 E-mail : pec.hubli@gmai.com

To,

RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without prepayment No.-WPP-255/31.12.2018
Published on 7th of Every Month
Posted at Market Yard PSO, Pune On- 10th of Every Month

If undelivered Please Return To
BJS Bharatiya Jain Sanghatana
Level IV, Muttha Towers, Loop Road, Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411016
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website: www.bjsindia.org **Email :** info@bjsindia.org **Facebook :** www.facebook.com / BJSIndiacommunity **Tweeter :** BJS_India

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकड़ी, पुणे – 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – 411006 से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (020) 41200600